14 दिसंबर, 2015 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में श्रीमती हेमा देवरे द्वारा लिखित पुस्तक 'गंगा टू मेकांगः ए कल्चरल वॉयेज थ्रू टेक्स्टाइल्स' के विमोचन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय अध्यक्ष का भाषण

1. श्रीमती हेमा देवरे की पुस्तक **' गंगा टू मेकांगः ए कल्चरल वॉयेज थ्रू टेक्स्टाइल्स'** उनके कई साल के शोध और अध्ययन का नतीजा है। हम सब जानते हैं कि वस्त्र मूलभूत आवश्यकता के साथ–साथ हमारे देश के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक जनजीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं।

2. श्रीमती देवरे संस्कृति और साहित्य में गहरी रूचि रखती हैं। अंग्रेजी, हिंदी और मराठी जैसी अलग–अलग भाषाओं में लिखती हैं। उनका भारतीय संस्कृति, वस्त्रों और इसके इतिहास तथा परम्पराओं के बारे में व्यापक अध्ययन है। उन्होंने 'बाली यात्रा' नामक एक नृत्य–नाटिका भी लिखी है जिसमें बाली और ओडिशा के बीच के प्राचीन संबंधों के बारे में बताया गया है। उन्होंने 'साड़ी सूत्र' नामक एक पुस्तक का सम्पादन भी किया है जिससे भारत और इंडोनेशिया के रेशमी वस्त्रों के बीच के संबंधों के बारे में बताया गया है। इसके अलावा, उन्होंने 'थ्रेड्स दैट बाइंड' नामक वृत्तचित्र का निर्माण किया है जिसमें भारत और इंडोनेशिया के बीच लम्बे अरसे से चले आ रहे सांस्कृतिक संबंधों के बारे में बताया गया है।

3. **उन्होंने वस्त्र उद्योग के माध्यम से मेकांग क्षेत्र और गंगा नदी क्षेत्र (यानी भारत) के बीच के सांस्कृतिक संबंधों को दर्शाया है।** उनके अध्ययन से पता चलता है कि गुजरात, कोरोमंडल तट और गंगा नदी के तट से भारतीयों ने कैसे अपने वस्त्र उद्योग का विस्तार दक्षिण–पूर्व एशिया की मुख्यभूमि में मेकांग नदी और इंडोनेशिया के समृद्ध स्पाइस आइलैंड तक किया। **वस्त्र न केवल व्यापार बल्कि संस्कृति, दर्शन, विचार और परम्पराओं के आपसी आदान–प्रदान का माध्यम है।** वस्त्रों ने भारत और दक्षिण पूर्व एशिया में आर्थिक और **निकट** सांस्कृतिक संबंध स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

4. इस किताब का नाम ''गंगा टू मेकांग– ए कल्चरल वोयेज थ्रू टेक्सटाइल्स'' इसलिए भी उचित प्रतीत होता है क्योंकि हमारी सभ्यता और संस्कृति की छाप और उसका प्रभाव वहां के दैनिक जीवन में, इतिहास में और वर्तमान में भी देखा जा सकता है। हमारे पारिवारिक मूल्य, दर्शन, चिंतन और सोच में काफी समानता है और एक–दूसरे की संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट दिखता है, जैसे आपसी प्रेम, भाईचारा, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व और सद्भाव की भावना इत्यादि। दक्षिण पूर्व एशिया में विभिन्न धर्मों के अनुयायी रहते हैं और वहां संस्कारों में, नामों में एवं दैनिक जीवन में बौद्ध एवं हिन्दु संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट दिखता है। उदाहरण के लिए ब्रुनेई की राजधानी का नाम ''बन्दर सेरी बेगवान'' है तो थाईलैंड के राजा का नाम ''श्री भूमिबोल अतुल्यतेज'' है, वहीं सम्राट सूर्यवर्मन द्वितीय के शासनकाल में

निर्मित कम्बोडिया में मेकांग नदी के किनारे स्थित अंकोरवाट का मंदिर है, जो विश्व का सबसे बड़ा हिन्दू मंदिर परिसर है।

5. इस पुस्तक में भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के संबंधों की चर्चा के साथ–साथ इस बात का भी जिक्र किया गया है कि सभ्यता, संस्कृति, परम्परा की तरह पहनावा में भी आपसी मेल–जोल बहुत स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। जिस प्रकार गंगा नदी हिमालय से निकलकर भारत के बड़े भू–भाग से होती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है, उसी प्रकार दक्षिण पूर्व एशिया के बड़े भू–भाग से होकर गुजरने वाली मेकांग नदी म्यांमार, थाईलैंड लाओस, कम्बोडिया और वियतनाम होते हुए अंत में दक्षिण चीन सागर में गिरती है। हमारे इन देशों में आपसी संबंध इतने निकटस्थ है कि सभी ने एक–दूसरे की परम्पराओं, वस्त्रशिल्प इत्यादि का अनुकरण किया है। एक जगह में दूसरे जगह की झलक मिल जाती है।

6. उदाहरण के लिए महाराष्ट्र में अजन्ता की गुफाओं में चित्रित एक महिला के परिधान में हंसों के चित्र चित्रित हैं जो दक्षिणी पूर्वी एशियाई देशों के परिधानों में अमूमन देखे जाते हैं। उसी प्रकार अंकोरवाट के मंदिरों में चित्रित देवी–देवताओं के परिधानों में भारतीय परिधान की झलक मिलती है। ऐसा ही थाइलैंड एवं इंडोनेशिया के देवस्थलों में भी देखा गया है। अर्थ यह है कि सांस्कृतिक एकता परिधानों में भी दृष्टिगोचर होती है।

7. एक बार रविन्द्रनाथ टैगोर दक्षिण पूर्व एशिया की यात्रा पर गए थे, तो उन्होंने कहा था कि **यहां तो भारत ही भारत दिखता है**। यानी हमारी

संस्कृति का प्रचार–प्रसार हजारों वर्षों से इन देशों में हुआ है। गुजरात, कोरोमंडल और बंगाल के तट से हो रहे कई सौ सालों के पुराने व्यापारिक संबंधों ने इसको एक नया आयाम दिया है। गुजरात का **इकट पटोला**, तो कोरोमंडल के **ब्लॉक प्रिंटिंग** वाले वस्त्र, उड़ीसा के **क्लिंग कपड़े**, आंध्र प्रदेश की **कलमकारी** तो गुजरात के **बंधेज** ऐसे वस्त्र शिल्प हैं, जो दक्षिण पूर्व एशिया के शहरों में आसानी से देखे जा सकते हैं। उनमें से कुछ तो उनकी पूजा पद्धति के अभिन्न अंग बन चुके हैं तो कुछ राजसी परम्परा में राज्याभिषेक या इस प्रकार के अवसरों पर पहने जाने वाले परिधान इस बात को साबित करते हैं।

8. ''**वस्त्र, मसालों और सोने**'' के त्रिभुज का यूरोपीय अर्थव्यवस्था में बहुत महत्व रहा है। वस्त्र उद्योग से मसालों के विनिमय की पुरानी परम्परा रही है। भारत में वस्त्र उद्योग विकसित अवस्था में थे तो दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में मसाले बड़ी मात्रा में उपजते थे। चूंकि भारत में औपनिवेशिक व्यवस्था थी, तभी यह व्यापार बहुत तेजी से दक्षिण–पूर्व एशिया में फैला था। यूरोप में औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप भारत से कच्चे माल को यूरोप ले जाया जाता था तथा वहां से तैयार माल भारत और दक्षिण पूर्व एशिया में भेजा जाता था, तथा बदले में मसाला खरीदा जाता था। यूरोपीय देशों में मसालों की विशेष मांग इसलिए होती है क्योंकि उसका इस्तेमाल खाद्य पदार्थों के परिरक्षण में किया जाता है। इस प्रकार, वस्त्र उद्योग से मसाला लेकर उसे यूरोपीय देशों में बेचा जाता था तथा उनके लाभ से सोना

कमाया जाता था। भारतीय वस्त्र परम्परा के यूरोपीय हाथों में जाने से उनके लिए कमाई का एक द्वार खुल गया था।

9. वस्त्र के व्यापार के साथ ही उन डिजाइनों, हस्तशिल्प एवं कलाकारी का प्रसार पूरे विश्व में भी हो जाता है तथा कुछ ऐसा ही उन देशों में हुआ जहां से भारत के साथ वस्त्र व्यापार हुआ करते थे।

10. भारत सरकार की वर्तमान नीति भी दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के साथ अपने पुराने संबंधों को और विकसित करने एवं उनके साथ मिलकर विकास की गति को तीव्र गति देने की है। इसी के तहत लुक ईस्ट पॉलिसी और एक्ट ईस्ट पॉलिसी अपनाई गई है।

11. चाहे म्यांमार हो, थाईलैंड हो, कम्बोडिया हो, जावा हो या सुमात्रा हो, सभी जगहों पर भारतीय वस्त्र शिल्प का प्रभाव दिखता है। चाहे राजसी पहनावा हो अथवा नागरी पहनावा हो, हर जगह भारतीय संस्कृति और परंपरा दिखती है। घरों से लेकर मंदिरों तक भारतीय पहनावे की झलक निरंतर मिलती है। चाहे बैंकाक के राजकुमार के राज्याभिषेक के समय की पोशाक हो या शादी के वक्त वहां की दुल्हन की पोशाक हो और भारत में पहने जाने वाली पोशाक, दोनों की समानता इस बात को दर्शाता है कि वस्त्र निर्माण की कला को पूर्णतः आत्मसात कर लिया गया है। मुझे इस बात की खुशी है कि भारत के बाहर दक्षिण पूर्व में बहुत से भारत हैं जो भारतीय सांस्कृतिक परम्परा, आदर्श और पहनावे का अनुसरण करते हैं।

12. पुस्तक का कलेवर बहुत अच्छा है। छपाई बहुत सुन्दर है तथा उनमें वर्णित तथ्य हमें इतिहास के झरोखे में ले जाते हैं और भारत के दक्षिण–पूर्वी एशियाई देशों की सांस्कृतिक परम्पराओं एवं वस्त्र–विन्यास के आपसी मेल–जोल को खूबसूरती के साथ प्रस्तुत करते हैं। मैं पुस्तक की लेखिका को बधाई देती हूं कि उन्होंने एक नए नज़रिए के साथ हमारे समक्ष नया शिल्प प्रस्तुत किया है। आशा करती हूं कि पुस्तक अपने प्रयोजनों में सफल सिद्ध होगा।

धन्यवाद।

———–